भारत की रणनीतिक गणना में यूरोप पहले से कहीं अधिक बड़ा

लेखक- सी. राजा मोहन
(दिल्ली में एशिया सोसाइटी नीति संस्थान के वरिष्ठ सदस्य)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

03 मई, 2022

यूक्रेन युद्ध ने दिखाया है कि भारत को यूरोप के साथ मजबूत वाणिज्यिक और सुरक्षा साझेदारी की आवश्यकता है ताकि इनके बीच कई सहयोग का निर्माण हो सके।

यूक्रेन में भयानक युद्ध समाप्त होने का कोई संकेत नहीं दिख रहा है और इस सप्ताह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बर्लिन, कोपेनहेगन एवं पेरिस की यात्रा हमें यूरोप में भारत के रूस के बाद के रणनीतिक भविष्य की एक झलक दे सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि पश्चिमी प्रतिबंधों से अलग-थलग पड़े रूस को चीन के साथ अपने गठबंधन को गहरा करने में अधिक दिलचस्पी दिख रही है, जिससे भारत की रणनीतिक गणना में यूरोप पहले से कहीं अधिक बड़ा होने लगा है।

पिछले हफ्ते, सामूहिक यूरोप के साथ जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित किया गया था। दिल्ली की अपनी यात्रा में, यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष, उर्सुला वॉन डेर लेयन ने भारत-यूरोप व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद (यह यूरोपीय संघ की दूसरी ऐसी परिषद है) की शुरुआत करके भारत के साथ यूरोपीय संघ की रणनीतिक साझेदारी के नए रूपों का अनावरण किया है। पिछले साल, यूरोपीय संघ ने अमेरिका के साथ इसी तरह के समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। इस सप्ताह, यूरोपीय प्रमुखों- जर्मनी और फ्रांस- के साथ-साथ यूरोप के एक महत्त्वपूर्ण उत्तरी कोने, तथाकथित नॉर्डेन के साथ भारत की प्रमुख द्विपक्षीय साझेदारी पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जो अपने छोटे आकार से बहुत ऊपर है। मोदी के दौरे से दिल्ली को यूरोप के उस नए मिजाज की बेहतर समझ मिलेगी जो रूसी आक्रमण से अस्थिर हो गया है। प्रधानमंत्री के पास युद्ध के कुछ नकारात्मक क्षेत्रीय तथा वैश्विक परिणामों को सीमित करने और प्रमुख यूरोपीय देशों के साथ मजबूत सहयोग के लिए उभरती संभावनाओं का पता लगाने का अवसर होगा।

बर्लिन में, प्रधानमंत्री के पास जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज के साथ सहानुभूति व्यक्त करने का अवसर होगा, क्योंकि दोनों नेताओं को यूक्रेन में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के युद्ध से निपटने के लिए उत्सुक है। दशकों से मास्को के साथ एक महत्त्वपूर्ण जुड़ाव बनाने के बाद, भारत और जर्मनी पर रूसी कनेक्शन से अलग होने का दबाव है। मोदी और स्कोल्ज इस बात पर भी चर्चा कर सकते हैं कि चीन के बारे में उनका लंबे समय से भ्रम कैसे टूट गया? ज्ञात हो कि दोनों का ऐसा मानना था कि चीन के साथ व्यापार करने से बीजिंग का व्यवहार नरम हो जाएगा, लेकिन दोनों का भ्रम अब टूट चुका है।

कोपेनहेगन में, डेनमार्क के नेतृत्व के साथ द्विपक्षीय वार्ता दिल्ली के बारे में है जो अंततः छोटे यूरोपीय देशों के लिए समय निकाल रही है। पिछले कुछ वर्षों में, दिल्ली ने सीखा है कि उनमें से हर एक भारत के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

डेनमार्क द्वारा आयोजित नॉर्डिक शिखर सम्मेलन यूरोप के विभिन्न उप-क्षेत्रों की भारत की खोज को रेखांकित करता है- बाल्टिक से बाल्कन तक और इबेरिया से मित्तलुरोपा तक। नॉर्डिक फाइव (डेनमार्क, फिनलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे और स्वीडन) की आबादी मुश्किल से 25 मिलियन है, लेकिन उनकी जीडीपी 1.8 ट्रिलियन डॉलर है जो रूस की तुलना में अधिक है।

पेरिस में मोदी के पास यूरेशिया और इंडो-पैसिफिक के लिए यूक्रेन में युद्ध के निहितार्थ पर राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन के साथ विचार करने का मौका होगा। मैक्रॉन की सत्ता में वापसी मोदी के लिए द्विपक्षीय संबंधों में अगले चरण की कल्पना करने के लिए एक सुनहरा अवसर है। दोनों नेताओं ने 2018 में एक मजबूत रणनीतिक साझेदारी की नींव रखी थी।

बर्लिन भारत की तुलना में रूस से कहीं अधिक गहराई से जुड़ा हुआ है। रूस के साथ जर्मनी का सालाना व्यापार करीब 60 अरब डॉलर का है जबकि भारत का 10 अरब डॉलर का। व्यापार संख्या से परे, मास्को पर बर्लिन की रणनीतिक निर्भरता गंभीर है। जर्मनी रूसी प्राकृतिक गैस पर बहुत अधिक निर्भर है, जबकि रूसी हथियार भारत के हथियारों पर हावी हैं। निश्चित रूप से, बर्लिन और दिल्ली रूस के साथ संबंधों को कम करने के पश्चिमी दबावों को पसंद नहीं करेंगे।

अपनी रूसी प्राथमिकताओं के बावजूद, जर्मनी और भारत के पास उन परिस्थितियों के साथ जीने के अलावा कोई विकल्प नहीं है जिन पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है। भारत-जर्मनी द्विपक्षीय संबंधों का विस्तार दिल्ली और बर्लिन द्वारा उस अनुकूलन का हिस्सा है। जर्मनी में, भारतीय प्रतिनिधिमंडल के वैश्विक मानदंडों पर जर्मनी की बढ़ती बयानबाजी से विचलित होने की संभावना नहीं है। सोशल डेमोक्रेट्स और ग्रीन्स, जो वर्तमान सत्तारूढ़ गठबंधन पर हावी हैं, विशेष रूप से इससे ग्रस्त हैं। यह आजादी के बाद के शुरुआती दशकों में दिल्ली की धार्मिक नैतिकता से बहुत अलग नहीं है।

जर्मनी वास्तव में वाणिज्य को चलाता है। भारत को जर्मनी के लिए एक आकर्षक नया गंतव्य बनना होगा और अब पीएम मोदी के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता रूसी और चीनी बाज़ारों में अपने जोखिम को कम करने में निहित होनी चाहिए। जर्मनी भारत के सबसे पुराने आर्थिक साझेदारों में से एक है, लेकिन दोनों देशों के बीच पूरी क्षमता के साथ वाणिज्यिक संबंधों को कभी महसूस नहीं किया गया है। यह कहना गलत नहीं होगा कि यदि भारत में निवेश और जर्मन व्यापार के भविष्य के बारे में कभी बड़ा सोचने का क्षण था, तो वह अभी है।

जर्मनी अकेला यूरोपीय देश नहीं है जो रूस के आक्रमण से पूरी तरह से अस्थिर हुआ है। नॉर्डिक दुनिया, जो भूमि के सा. थ-साथ आर्कटिक जल में रूस के साथ सीमाएँ साझा करती है, युद्ध से और भी अधिक परेशान है। यदि पुतिन के युद्ध ने बर्लिन को बड़े रक्षा व्यय के प्रतिरोध को समाप्त करने के लिए मजबूर किया है, तो नॉर्डिक के पाँच में से दो सदस्य (स्वीडन और फिनलैंड) अब अपनी लंबे समय से तटस्थ स्थिति को समाप्त करने और नाटो में शामिल होने के लिए दौड़ रहे हैं। अन्य तीन (डेनमार्क, आइसलैंड और नॉर्वे) 1949 में स्थापित नाटो के संस्थापक सदस्य रहे हैं।

कोपेनहेगन में, मोदी डेनमार्क के साथ अद्वितीय द्विपक्षीय हरित रणनीतिक साझेदारी का निर्माण करना चाहेंगे। 2017 में मोदी के पहले नॉर्डिक शिखर सम्मेलन ने तकनीकी नवाचार और सतत विकास सहित कई मुद्दों पर एक महत्वाकांक्षी द्विपक्षीय एजेंडा के लिए एक रूपरेखा तैयार की है। डेनमार्क शिखर सम्मेलन प्रगति की समीक्षा करेगा और इसके दायरे का विस्तार करेगा।

वापस जाते समय, मोदी फ्रांस के साथ रणनीतिक साझेदारी में अगले चरण को स्थापित करने के लिए पेरिस में रुक रहे हैं। मोदी को शायद उम्मीद है कि यूक्रेन में युद्ध से परहेज करते हुए और यूरोपीय व्यवस्था में रूस के शांतिपूर्ण एकीकरण के लिए एक राजनीतिक ढांचा विकसित करने के मैक्रॉन के साहसिक प्रयास सफल होंगे। लेकिन पुतिन की योजनाएँ अलग थीं। पिछले कुछ समय से यह कहा जा रहा है कि फ्रांस भारत का "नया रूस" है- दिल्ली का सबसे महत्त्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार। हाल के वर्षों में, फ्रांस संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत के हितों का एक मजबूत रक्षक और विशाल इंडो-पैसिफिक थिएटर में एक क्षेत्रीय सहयोगी के रूप में उभरा है। फ्रांस भी भारत को उन्नत हथियारों का प्रमुख आपूर्तिकर्ता रहा है।

लेकिन दिल्ली और पेरिस अपनी रक्षा साझेदारी की पूरी संभावनाओं को प्रदर्शित करने से कुछ दूरी पर खड़े हैं। निजी और विदेशी पूंजी की अधिक भागीदारी के साथ हथियारों के घरेलू उत्पादन का विस्तार करने की भारत की महत्वाकांक्षी वर्तमान योजनाओं को सफल बनाने में फ्रांस की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हालाँकि, सवाल यह है कि क्या मोदी और मैक्रॉन अपनी नौकरशाही को रक्षा

औद्योगिक सहयोग के लिए एक बड़ी परियोजना लाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं? क्या वे भारत में लड़ाकू जेट इंजन के विकास पर आगे बढ़ सकते हैं? और क्या दिल्ली और पेरिस समुद्री परमाणु प्रणोदन पर रूस के साथ भारत के रणनीतिक सहयोग की बराबरी कर सकता हैं?

इसमें कोई शक नहीं कि पश्चिमी यूरोप हाशिये से हटकर भारत की विदेश और सुरक्षा नीतियों के केन्द्र में आ गया है। यूक्रेन में संकट, जिसने 1991 में उभरी क्षेत्रीय व्यवस्था को चकनाचूर कर दिया है, भारत और उसके यूरोपीय भागीदारों के बीच गहन रणनीतिक सहयोग की अनिवार्यता को तेज़ करता है।

औपनिवेशिक काल में भारत यूरोप को अंग्रेजों की नजर से देखता था। तथाकथित यह दृष्टिकोण ग्रेट गेम ब्रिटेन के यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों (फ्रांस, रूस और जर्मनी सहित) को उपमहाद्वीप से दूर रखने के संदर्भ में था। उत्तर-औपनिवेशिक युग में, भारत ने इस क्षेत्र में यूरोपीय प्रभाव को सीमित करने के लिए रूस के साथ गठबंधन करके प्रतिमान को बदल दिया है। यूक्रेन युद्ध के बाद, एक नया प्रतिमान भारत को आकर्षित कर रहा है।

GS World
Committed To Excellence

जीएस वर्ल्ड टीम इनपुट

IN THE NEWS

उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (NATO)

चर्चा में क्यों?

- रूस और यूक्रेन विवाद में जिस संगठन की चर्चा सबसे अधिक हो रही है वह संगठन है नाटो (NATO)।
- इसकी भूमिका की चर्चा हो रही है और कहा जा रहा है कि NATO अपने कर्त्तव्यों से भाग रहा है।
- अधिकांश यूरोपीय यह मानते हैं कि NATO ने रूस को यूक्रेन पर आक्रमण करने से रोकने के लिए पर्याप्त कार्य नहीं किया।

क्या है?

- इसे वर्ष 1949 में 28 यूरोपीय देशों और 2 उत्तरी अमेरिकी देशों के बीच बनाया गया है।
- नाटो का उद्देश्य राजनीतिक और सैन्य साधनों के माध्यम से अपने सदस्य देशों को स्वतंत्रता और सुरक्षा की गारंटी देना है और रक्षा और सुरक्षा संबंधी मुद्दों पर सहयोग के माध्यम से देशों के बीच संघर्ष को रोकना है। इसे दूसरे विश्व युद्ध के बाद बनाया गया था।
- इसका मुख्यालय ब्रूसेल्स (बेल्जियम) में है।

क्या हैं नाटो के कार्यक्षेत्र?

- नाटो के किसी भी एक देश पर आक्रमण पूरे संगठन पर आक्रमण होगा यानी किसी के एक देश पर आक्रमण का जवाब नाटो के सभी देश देंगें।
- नाटो की अपनी कोई सेना या अन्य कोई रक्षा सूत्र नहीं है बल्कि नाटो के सभी सदस्य देश आपसी समझ के आधार पर अपनी-अपनी सेनाओं के साथ योगदान देंगे। केवल नाटो के सदस्य देश ही उसके संरक्षण का लाभ ले सकते हैं। अन्य देश जो नाटो के सदस्य नहीं हैं उनके प्रति नाटो की कोई जवाबदेही नहीं होगी।
- इसके साथ ही अन्य विशेष बात ये भी है कि नाटो अपने सदस्य देशों पर किसी भी बाहरी आक्रमण से बचाव के प्रति जवाबदेह है लेकिन यदि किसी सदस्य देश में सिविल या कोई अन्य वॉर होता है तो नाटो की उसमें शून्य भागीदारी होगी।

कैसे होती है नाटो (NATO) की फंडिंग?

- नाटो की फंडिंग उसके सदस्य देशों द्वारा ही की जाती है और बात अगर नाटो की फंडिंग की हो तो अमेरिका को इसका बैकबोन कहा जाता है क्योंकि इसके बजट का तीन-चौथाई भाग अमेरिका देता है।
- वर्ष 2020 में नाटो के सभी सदस्यों का संयुक्त सैन्य खर्च विश्व के कुल खर्च का 57% था।
- सदस्यों ने सहमति व्यक्त की कि उनका लक्ष्य 2024 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद के कम से कम 2% के लक्ष्य रक्षा खर्च तक पहुँचना है।

नाटो (NATO) के सदस्य

- वर्तमान में इसमें 30 सदस्य देश शामिल हैं, जिसमें उत्तरी मैसेडोनिया वर्ष 2020 में गठबंधन में शामिल होने वाला नवीनतम सदस्य बन गया है।
- हालाँकि, 1949 में नाटो के मूल सदस्य बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, आइसलैंड, इटली, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड, नॉर्वे, पुर्तगाल, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका थे।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (NATO) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-

1. यह एक सैन्य गठबंधन है, जिसकी स्थापना 4 अप्रैल 1949 को हुई थी।
2. नाटो का गठन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद किया गया था।
3. वर्तमान में इसमें 28 सदस्य देश शामिल हैं, जिसमें उत्तरी मैसेडोनिया वर्ष 2020 में गठबंधन में शामिल होने वाला नवीनतम सदस्य बन गया है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(क) केवल 1
(ख) 1 और 2
(ग) 2 और 3
(घ) केवल 3

Expected Question (Prelims Exams)

Q. Consider the following statements in the context of North Atlantic Treaty Organization (NATO):-

1. It is a military alliance, which was established on 4 April 1949.
2. NATO was formed after the Second World War.
3. It currently consists of 28 member states, with North Macedonia becoming the latest member to join the alliance in the year 2020.

Which of the above statements is /are correct?

(a) 1 only
(b) 1 and 2
(c) 2 and 3
(d) 3 only

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. आजादी के बाद पहली बार भारत के हित अब यूरोप के हितों के साथ जुड़ रहे हैं। यूरोप के साथ भारत के संबंधों के परिवर्तन को आकार देने वाले कारकों पर प्रकाश डालते हुए चर्चा करें कि रूस-यूक्रेन युद्ध पर भारत की स्थिति यूरोपीय संघ के संबंधों के लिए क्या मायने रखती है? (250 शब्द)

Q. For the first time since independence, the interests of India are now merging with the interests of Europe. While highlighting the factors shaping the transformation of India's relations with Europe, discuss what is the significance of India's position on the Russia-Ukraine war for EU relations? (250 Words)

Committed To Excellence

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।